

王国维

# 中国近代名家名作宝库

主 编 寒 天

---

内蒙古人民出版社出版、发行 新华书店总经销  
北京兆成印刷厂印刷

---

850 × 1168 毫米 32 开本 431 .25 印张 968 .76 万字  
2003 年 6 月第 1 版 2003 年 6 月第 1 次印刷  
印数:1 - 1000 册

---

ISBN 7 - 204 - 05471 - 7

定价:1352 .00 元

## 作者简介

王国维(1877—1927) 近代学者、文学家。字静安,一字伯隅,号观堂,浙江宁海人。民国时,曾任清华大学研究院教授。早年入罗振玉“东文学社”。学习日文、西洋哲学、文学、美术,而于叔本华、尼采之说,钻研尤深。一生博学多识,在文学、美学、史学、古文字学等方面均有建树。1907年起,研究此曲及中国戏曲史,撰成《人间词话》、《曲录》,对中国古典戏曲的发展过程和历史潮流等作了富有见地的总结性的论述,对于元曲的艺术特色有许多精辟的分析。他反对把艺术作为道德政治的手段,主张保持艺术的纯粹性、独立性和超功利性,表现了他的唯心主义的文艺观。在《人间词话》中,发展了古代艺术的“意境”说,认为“词以境界为最上。有境界则自成高格,自有名句”,并提出“有我之境”与“无我之境”、“造境”与“写境”的区分等,有许多独到的见解和理论上的新贡献。一生著述多达60余种,辑为《王静安先生遗书》刊行。

# 目 录

|           |       |
|-----------|-------|
| 上 卷 ..... | ( 3 ) |
| 一 .....   | ( 3 ) |
| 二 .....   | ( 3 ) |
| 三 .....   | ( 3 ) |
| 四 .....   | ( 4 ) |
| 五 .....   | ( 4 ) |
| 六 .....   | ( 4 ) |
| 七 .....   | ( 4 ) |
| 八 .....   | ( 5 ) |
| 九 .....   | ( 5 ) |
| 十 .....   | ( 5 ) |
| 十一 .....  | ( 5 ) |
| 十二 .....  | ( 6 ) |
| 十三 .....  | ( 6 ) |
| 十四 .....  | ( 6 ) |
| 十五 .....  | ( 6 ) |
| 十六 .....  | ( 7 ) |
| 十七 .....  | ( 7 ) |
| 十八 .....  | ( 7 ) |
| 十九 .....  | ( 7 ) |

|          |       |
|----------|-------|
| 二十 ..... | ( 8 ) |
| 二一 ..... | ( 8 ) |
| 二二 ..... | ( 8 ) |
| 二三 ..... | ( 8 ) |
| 二四 ..... | ( 9 ) |
| 二五 ..... | ( 9 ) |
| 二六 ..... | ( 9 ) |
| 二七 ..... | ( 9 ) |
| 二八 ..... | (10)  |
| 二九 ..... | (10)  |
| 三十 ..... | (10)  |
| 三一 ..... | (10)  |
| 三二 ..... | (11)  |
| 三三 ..... | (11)  |
| 三四 ..... | (11)  |
| 三五 ..... | (11)  |
| 三六 ..... | (12)  |
| 三七 ..... | (12)  |
| 三八 ..... | (12)  |
| 三九 ..... | (12)  |
| 四十 ..... | (13)  |
| 四一 ..... | (13)  |
| 四二 ..... | (13)  |
| 四三 ..... | (14)  |
| 四四 ..... | (14)  |
| 四五 ..... | (14)  |

|              |      |
|--------------|------|
| 四六 .....     | (14) |
| 四七 .....     | (15) |
| 四八 .....     | (15) |
| 四九 .....     | (15) |
| 五十 .....     | (15) |
| 五一 .....     | (16) |
| 五二 .....     | (16) |
| 五三 .....     | (16) |
| 五四 .....     | (16) |
| 五五 .....     | (17) |
| 五六 .....     | (17) |
| 五七 .....     | (17) |
| 五八 .....     | (18) |
| 五九 .....     | (18) |
| 六十 .....     | (18) |
| 六一 .....     | (18) |
| 六二 .....     | (19) |
| 六三 .....     | (19) |
| 六四 .....     | (19) |
| 下    卷 ..... | (20) |
| 一 .....      | (20) |
| 二 .....      | (20) |
| 三 .....      | (21) |
| 四 .....      | (21) |
| 五 .....      | (21) |
| 六 .....      | (21) |

|          |      |
|----------|------|
| 七 .....  | (22) |
| 八 .....  | (22) |
| 九 .....  | (22) |
| 十 .....  | (22) |
| 十一 ..... | (22) |
| 十二 ..... | (23) |
| 十三 ..... | (23) |
| 十四 ..... | (23) |
| 十五 ..... | (23) |
| 十六 ..... | (24) |
| 十七 ..... | (24) |
| 十八 ..... | (24) |
| 十九 ..... | (24) |
| 二十 ..... | (25) |
| 二一 ..... | (25) |
| 二二 ..... | (25) |
| 二三 ..... | (26) |
| 二四 ..... | (26) |
| 二五 ..... | (26) |
| 二六 ..... | (26) |
| 二七 ..... | (27) |
| 二八 ..... | (27) |
| 二九 ..... | (27) |
| 三十 ..... | (27) |
| 三一 ..... | (28) |
| 三二 ..... | (28) |

|     |       |      |
|-----|-------|------|
| 三三  | ..... | (28) |
| 三四  | ..... | (28) |
| 三五  | ..... | (29) |
| 三六  | ..... | (29) |
| 三七  | ..... | (29) |
| 三八  | ..... | (29) |
| 三九  | ..... | (30) |
| 四十  | ..... | (30) |
| 四一  | ..... | (30) |
| 四二  | ..... | (31) |
| 四三  | ..... | (31) |
| 四四  | ..... | (31) |
| 四五  | ..... | (31) |
| 四六  | ..... | (32) |
| 四七  | ..... | (32) |
| 四八  | ..... | (32) |
| 四九  | ..... | (32) |
| 少年游 | ..... | (33) |
| 阮郎归 | ..... | (34) |
| 蝶恋花 | ..... | (35) |
| 浣溪沙 | ..... | (36) |
| 临江仙 | ..... | (36) |
| 浣溪沙 | ..... | (38) |
| 好事近 | ..... | (38) |
| 好事近 | ..... | (39) |
| 采桑子 | ..... | (39) |

|                   |      |
|-------------------|------|
| 西    河 .....      | (40) |
| 摸    鱼    儿 ..... | (41) |
| 秋    柳 .....      | (41) |
| 蝶    恋    花 ..... | (42) |
| 鷓    鴣    天 ..... | (43) |
| 点    绛    唇 ..... | (43) |
| 点    绛    唇 ..... | (44) |
| 踏    莎    行 ..... | (45) |
| 清    平    乐 ..... | (46) |
| 浣    溪    沙 ..... | (46) |
| 青    玉    案 ..... | (47) |
| 满    庭    芳 ..... | (48) |
| 玉    楼    春 ..... | (49) |
| 阮    郎    归 ..... | (50) |
| 浣    溪    沙 ..... | (51) |
| 浣    溪    沙 ..... | (51) |
| 青    玉    案 ..... | (52) |
| 浣    溪    沙 ..... | (53) |
| 鹊    桥    仙 ..... | (54) |
| 减字木兰花 .....       | (55) |
| 贺    新    郎 ..... | (56) |
| 人    月    圆 ..... | (57) |
| 梅 .....           | (57) |
| 卜    算    子 ..... | (58) |
| 水    仙 .....      | (58) |
| 八声甘州 .....        | (59) |

|              |      |
|--------------|------|
| 浣溪沙          | (60) |
| 踏莎行          | (61) |
| 元夕           | (61) |
| 蝶恋花          | (62) |
| 蝶恋花          | (63) |
| 蝶恋花          | (64) |
| 临江仙          | (65) |
| 南歌子          | (65) |
| 荷叶杯戏效花间体(六首) | (66) |
| 一            | (66) |
| 二            | (66) |
| 三            | (67) |
| 四            | (67) |
| 五            | (68) |
| 六            | (68) |
| 玉楼春          | (69) |
| 蝶恋花          | (70) |
| 水龙吟          | (71) |
| 杨花用章质夫苏子瞻唱和韵 | (71) |
| 点绛唇          | (72) |
| 浣溪沙          | (73) |
| 点绛唇          | (73) |
| 蝶恋花          | (74) |
| 蝶恋花          | (75) |
| 浣溪沙          | (76) |
| 浣溪沙          | (76) |

|             |      |
|-------------|------|
| 苏 幕 遮 ..... | (77) |
| 浣 溪 沙 ..... | (78) |
| 蝶 恋 花 ..... | (78) |
| 蝶 恋 花 ..... | (79) |
| 点 绛 唇 ..... | (80) |
| 清 平 乐 ..... | (81) |
| 浣 溪 沙 ..... | (81) |

## 诗 歌

|                    |      |
|--------------------|------|
| 读史二十首(录十二) .....   | (82) |
| 嘉兴道中 .....         | (84) |
| 五月十五夜坐雨赋此 .....    | (84) |
| 晓 步 .....          | (85) |
| 偶 成 .....          | (85) |
| 坐 致 .....          | (86) |
| 读史二首 .....         | (86) |
| 和巽斋老人伏日杂诗四首 .....  | (87) |
| 游 仙 .....          | (88) |
| 戊午日短至 .....        | (88) |
| 东轩老人两和前韵再叠一章 ..... | (88) |
| 杂 感 .....          | (89) |
| 偶成二首 .....         | (90) |
| 一 .....            | (90) |
| 二 .....            | (90) |
| 颐和园词 .....         | (91) |
| 送日本狩野博士游欧洲 .....   | (94) |
| 蜀 道 难 .....        | (95) |

|                     |       |
|---------------------|-------|
| 壬子岁除即事 .....        | (98)  |
| 咏    史癸丑(五首) .....  | (98)  |
| 一 .....             | (98)  |
| 二 .....             | (99)  |
| 三 .....             | (99)  |
| 四 .....             | (100) |
| 五 .....             | (100) |
| 昔    游(六首) .....    | (101) |
| 一 .....             | (101) |
| 二 .....             | (101) |
| 三 .....             | (102) |
| 四 .....             | (102) |
| 五 .....             | (103) |
| 六 .....             | (103) |
| 隆裕皇太后挽歌辞九十韵 .....   | (104) |
| 癸丑三月三日京都兰亭会诗 .....  | (108) |
| 游    仙 .....        | (110) |
| 乙    卯 .....        | (110) |
| 海上送日本内藤博士 .....     | (111) |
| 海日楼歌寿东轩先生七十戊午 ..... | (112) |
| 冬夜读《山海经》感赋 .....    | (114) |
| 致汪康年 .....          | (115) |
| 致缪荃孙 .....          | (117) |
| 致罗振玉 .....          | (119) |
| 一 .....             | (119) |
| 二 .....             | (119) |

|                          |       |
|--------------------------|-------|
| 三 .....                  | (121) |
| 陈宝说 .....                | (123) |
| 《书·顾命》同瑁说 .....          | (125) |
| 与友人论《诗》、《书》中成语书(一) ..... | (127) |
| 战国时秦用籀文六国用古文说 .....      | (129) |
| 《史记》所谓古文说 .....          | (131) |
| 《汉书》所谓古文说 .....          | (134) |
| 《说文》所谓古文说 .....          | (136) |
| 《说文》今叙篆文合以古籀说 .....      | (138) |
| 汉时古文本诸经传考 .....          | (140) |
| 科斗文字说 .....              | (145) |
| 汉魏博士考 .....              | (147) |
| 南宋人所传蒙古史料考 .....         | (171) |

人间词话

上 卷

一

词以境界为最上。有境界则自成高格，自有名句。五代北宋之词所以独绝者在此。

二

有造境，有写境，此理想与写实二派之所由分。然二者颇难分别。因大诗人所造之境，必合乎自然，所写之境，亦必邻于理想故也。

三

有有我之境，有无我之境。“泪眼问花花不语，乱红飞过秋千去。”可堪孤馆闭春寒，杜鹃声里斜阳暮。”有我之境也。“采菊东篱下，悠然见南山。”寒波澹澹起，白鸟悠悠下。”无我之境也。有我之境，以我观物，故物我皆著我之色彩。无我之

境,以物观物,故不知何者为我,何者为物。古人为词,写有我之境者为多,然未始不能写无我之境,此在豪杰之士能自树立耳。

#### 四

无我之境,人惟于静中得之。有我之境,于由动之静时得之。故一优美,一宏壮也。

#### 五

自然中之物,互相限制。然其写之于文学及美术中也,必遗其关系,限制之处。故虽写实家,亦理想家也。又虽如何虚构之境,其材料必求之于自然,而其构造,亦必从自然之法则。故虽理想家,亦写实家也。

#### 六

境非独谓景物也。喜怒哀乐,亦人心中之一境界。故能写真景物,真感情者,谓之有境界。否则谓之无境界。

#### 七

“红杏枝头春意闹”,著一“闹”字,而境界全出。“云破月来花弄影”,著一“弄”字,而境界全出矣。

## 八

境界有大小，不以是而分优劣。“细雨鱼儿出，微风燕子斜”何遽不若“落日照大旗，马鸣风萧萧”。“宝帘闲挂小银钩”何遽不若“雾失楼台，月迷津渡”也。

## 九

严沧浪《诗话》谓：“盛唐诸人，唯在兴趣。羚羊挂角，无迹可求。故其妙处，透彻玲珑，不可凑拍。如空中之音、相中之色、水中之月、镜中之象，言有尽而意无穷。”余谓：北宋以前之词，亦复如是。然沧浪所谓兴趣，阮亭所谓神韵，犹不过道其面目，不若鄙人拈出“境界”二字，为探其本也。

## 十

太白纯以气象胜。“西风残照，汉家陵阙。”寥寥八字，遂关千古登临之口。后世唯范文正之《渔家傲》，夏英公之《喜迁莺》，差足继武，然气象已不逮矣。

## 十一

张皋文谓：“飞卿之词，深美闳约。”余谓：此四字唯冯正中足以当之。刘融齐谓：“飞卿精妙绝人。”差近之耳。

## 十二

“画屏金鹧鸪”，飞卿语也，其词品似之。“弦上黄莺语”，端己语也，其词品亦似之。正中词品，若欲于其词句中求之，则“和泪试严妆”，殆近之欤？

## 十三

南唐中主词：“菡萏香销翠叶残，西风愁起绿波闲。”大有众芳芜秽，美人迟暮之感。乃古今独赏其“细雨梦回鸡塞远，小楼吹彻玉笙寒。”故知解人正不易得。

## 十四

温飞卿之词，句秀也。韦端己之词，骨秀也。李重光之词，神秀也。

## 十五

词至李后主而眼界始大，感慨遂深，遂变伶工之词而为士大夫之词。周介存置诸温韦之下，可为颠倒黑白矣。“自是人生长恨水长东”、“流水落花春去也，天上人间”，《金荃》《浣花》，能有此气象耶？